28

यीशु के अधिकार को चुनौती

(12:22-37)

थोड़े विराम के बाद (12:15-21) मत्ती यीशु और फरीसियों के बीच झगड़े के वर्णन के लिए फिर से लौट आया। इस अध्याय में इन दोनों पक्षों के बीच पिछले झगड़ों में सब्त का मुद्दा भी था (12:1-14)। यहां मुख्य मुद्दा उस अधिकार का था, जिससे यीशु आश्चर्यकर्म करता था (12:22-37)।

फरीसियों का झूठा आरोप (12:22-24)

[22]तब लोग एक अंधे-गूंगे को, जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए, और उस ने उसे अच्छा किया, और वह बोलने और देखने लगा। [23]इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, ''यह क्या दाऊद की सन्तान है!'' [24]परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, ''यह तो दुष्टात्माओं के सरदार बालजबूल की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।''

आयत 22. जिसमें दुष्टात्मा थी जो न देख सकता था और न बोल सकता था, लोग उसे **यीशु के पास लाए**। उस व्यक्ति का अंधापन और गूंगापन दोनों ही दुष्टात्मा से पीड़ित होने का परिणाम माना जाता है (9:32 पर टिप्पणियां देखें)। दुष्टात्मा को निकालकर यीशु ने उस व्यक्ति को उस की दृष्टि और आवाज़ लौटाकर उसे **अच्छा किया**।

आयत 23. आश्चर्यकर्म से इकट्ठा हुए **सब लोग चकित** (*existēmi*) या ''पूरी तरह से विस्मित हुए।'' इस समूह के कई लोगों ने यीशु को चाहे और आश्चर्यकर्म करते हुए देखा था पर इससे वे चकित रह गए।

लोग चाहे यीशु के आश्चर्यकर्म से अभिभूत थे पर उन्हें यह समझ नहीं आता था कि यीशु कौन है (देखें यूहन्ना 7:12, 40-43; 10:19-21)। उसके आश्चर्यकर्मों के पीछे काम करने वाली सामर्थ ने उन्हें संकेत दिया कि वह प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा है। परन्तु जब उन्होंने यीशु को देखा तो उन्हें संदेह हुआ कि यह साधारण सा बढ़ई का पुत्र जो घुमक्कड़ प्रचारक बन गया था, सचमुच में वह नहीं हो सकता था, जिसकी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी। लोग फरीसियों की उपस्थिति से प्रभावित होकर भी अनिश्चित हुए हो सकते हैं (देखें यूहन्ना 7:13; 9:22; 19:38)।

दाऊद की सन्तान वाक्यांश मसीहा का शीर्षक है, जिसकी जड़ें पुराने नियम में हैं (2 शमूएल 7:12-16; भजन संहिता 89:3, 4; यशायाह 9:6, 7; यिर्मयाह 23:5) और मत्ती की पुस्तक में कई बार मिलता है (1:1 पर टिप्पणियां देखें)।[1]

आयत 24. फरीसियों को उद्धारकर्त्ता के लिए लोगों की तारीफ़ सुनकर परेशानी होती थी।

उनकी चिन्ता के कारण यह परमेश्वर की निन्दा करने वाली बात निकली कि यीशु परमेश्वर की सामर्थ के बजाय **दुष्टात्माओं के सरदार बालज़बूल** की सामर्थ से **दुष्टात्माओं** को निकालता है (9:33, 34 पर टिप्पणियां देखें; 10:25)। ''बालज़बूल'' एक नाम था, जिससे यहूदी लोग शैतान की बात करते थे और यहां पर स्पष्ट है कि उनका इशारा किसकी ओर था। फरीसी लोग स्वयं आश्चर्यकर्मों का इनकार नहीं कर सकते थे, इस कारण वे आश्चर्यकर्मों के स्रोत को ही बदनाम करने का प्रयास करते थे।[2] उनका लक्ष्य मसीह की प्रतिष्ठा और लोगों में उस की प्रसिद्ध स्वीकृति को नष्ट करना था।

अपने अधिकार के लिए यीशु की सफ़ाई (12:25-30)

[25]उस ने उनके मन की बात जानकर उनसे कहा; ''जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है; और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा। [26]और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उस का राज्य कैसे बना रहेगा? [27]भला यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारा न्याय करेंगे। [28]पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। [29]या कैसे कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उस का माल लूट सकता है, जब तक कि पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले? तब वह उस का घर लूट लेगा। [30]जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता है।

आयत 25. फरीसियों का आरोप कि यीशु बालज़बूल की शक्ति से दुष्टात्माओं को निकालता है (12:24) सीधे यीशु के लिए नहीं था। लोगों के बीच में यही बातें होती होंगी। **यीशु** ने उनके शब्दों को नहीं सुना, बल्कि **उनके मन की बात** पढ़ ली (देखें 9:4; यूहन्ना 2:24, 25)।

अपने पहले उत्तर में यीशु ने फरीसियों के इस आरोप के बेतुका होने का संकेत दिया। उस ने **किसी राज्य**, **नगर** या **घराने** के तीन उदाहरणों का इस्तेमाल अपनी बात साबित करने के लिए किया। सभी तुलनाएं लोगों के महत्व को दर्शाती हैं: राज्य के नागरिक, नगर के निवासी और घराने के सदस्य। इनमें से यदि किसी में भी **फूट** होती है, तो यह **बना न रहेगा**। क्रेग एस. कीनर का मानना था कि यह भाषा लोकोक्ति की हो सकती है।[3] यह माना हुआ तथ्य था कि भीतरी क्लेश विनाश का कारण बनता है, और यीशु के सुनने वाले इस सच्चाई से पूरी तरह से परिचित थे। इस्राएल का प्राचीन राज्य सुलैमान के शासन के बाद बंट गया था (1 राजाओं 12:1-24) और राज्य के दो भाग अन्त में अश्शूर और बाबुल की दासताओं में चले गए थे (2 राजाओं 18:9-12; 25:1-21)।

आयत 26. सच्चाई का उदाहरण देने के बाद यीशु ने इसे उस स्थिति पर लागू किया: **''यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उस का राज्य कैसे बना रहेगा?''** शैतान के लिए जो चतुर और धूर्त है (उत्पत्ति 3:1; 1 पतरस 5:8), अपना ही विरोध करने का कोई मतलब नहीं है। वह उन दुष्टात्माओं को निकालकर जिसे उस ने लोगों को

सताने के लिए भेजा था, अपनी ही पराजय क्यों करवाता?

यीशु का प्रश्न इस तथ्य को सामने लाता है कि शैतान का भी एक ''राज्य'' है। पौलुस ने इसे ''शैतान का अधिकार'' (प्रेरितों 26:18) और ''अन्धकार का वश'' (कुलुस्सियों 1:13) के रूप में वर्णित किया। मसीही व्यक्ति की लड़ाई शैतान के राज्य अर्थात ''प्रधानों से,'' ''अधिकारियों से,'' ''इस संसार के अधिकार के हाकिमों से'' और ''दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है, जो आकाश में हैं'' (इफिसियों 6:12)।

आयत 27. मसीह ने न्याय में फरीसियों के परस्पर विरोध को दिखाना जारी रखा। उन्होंने उस पर **बालज़बूल** की शक्ति से **दुष्टात्माओं** को निकालने का आरोप लगाया था। जवाब में, यीशु ने उन से पूछा, **''तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं?''** ये ''वंश'' फरीसियों के विशेष शिष्य या अनुयायी थे, जो दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ होने का दावा करते थे।[4] यीशु पर उसी बात को करने के लिए, जिसे करने के योग्य होने का वह दावा करते थे, शैतान से मिलकर करने का आरोप क्यों लगाया गया था? फरीसियों के इन शिष्यों पर शैतान की शक्ति से अपने तन्त्र-मन्त्र के काम करने का आरोप नहीं लगाया गया था। तो फिर यीशु पर क्यों लगाया गया? यह कहना कि **वे ही तुम्हारा न्याय करेंगे** यह तर्क देना है कि फरीसी लोग उसी नाम से अपने शिष्यों के जादू-टोने को मांगने पर देते थे, निष्पक्ष होने के लिए उन्हें यीशु को भी मान्यता देनी चाहिए थी।

आयत 28. तर्कसंगत रूप में यीशु के शत्रुओं को या तो यह मान लेना चाहिए था कि यहूदी जादू-टोना करने वाले धोखेबाज हैं या यह निष्कर्ष निकालना चाहिए था कि यीशु उसी अधिकार अर्थात परमेश्वर की सामर्थ से **दुष्टात्माओं को निकालता** था। यीशु ने उन्हें ध्यान दिलाया था कि यदि वे वास्तव में **परमेश्वर के आत्मा** की सामर्थ का इस्तेमाल कर रहे हैं तो उन्हें पता होना चाहिए कि परमेश्वर का राज्य उनके बीच में आ चुका था। ''परमेश्वर के आत्मा'' की जगह लूका ने ''परमेश्वर की उंगली'' दिया है (लूका 11:20; देखें निर्गमन 8:19; 31:18; भजन संहिता 8:3)।

''परमेश्वर का राज्य'' वाक्यांश मत्ती के विवरण में केवल चार बार मिलता है (12:28; 19:24; 21:31, 43)। मत्ती का पसन्दीदा शब्द ''स्वर्ग का राज्य'' था। दोनों एक ही संस्थान के लिए अलग-अलग शीर्षक हैं। राज्य का आरम्भ स्वर्ग में हुआ और यह परमेश्वर का है। आज इस पर उस का पुत्र स्वर्ग में अपने सिंहासन से शासन करता है (प्रेरितों 2:22-36)। कलीसिया वही राज्य है (16:18, 19)। राज्य चाहे औपचारिक रूप में पिन्तेकुस्त के दिन तक स्थापित नहीं हुआ था पर यहां पर यह मसीह के सामर्थ के कामों के द्वारा संसार में घुस रहा था।

आयत 29. यीशु ने एक **बलवंत के घर** का, जिसमें घुसा जा रहा था, एक छोटा दृष्टांत अपने सुनने वालों को दिया (देखें यशायाह 49:24-26)। यह तब तक नहीं हो सकना था, जब तक **पहले उसे बांध न दिया जाता**। कहानी में **बलवंत** स्पष्टतया शैतान को कहा गया है। उस का **घर** शायद उसके राज्य अर्थात संसार को कहा गया है, जो उसके अधीन है। **उस का माल** उन लोगों को कहा गया है, जिनमें दुष्टात्मा वास करते थे। ''माल'' के लिए यूनानी शब्द (*skeuos*) का अनुवाद ''बर्तन'' भी हो सकता है। सामान के साथ-साथ कई बार इसका इस्तेमाल मानवीय देहों के लिए भी हुआ है (प्रेरितों 9:15; 2 कुरिन्थियों 4:7; 1 थिस्सलुनीकियों 4:4; 2 तीमुथियुस

2:20, 21; 1 पतरस 3:7)। शब्द की लचक विशेषकर इस दृष्टांत के लिए उपयोगी है।

यीशु शैतान के इलाके में तब तक नहीं **घुस** सकता था, जब तक वह उसे बांध न देता (देखें प्रकाशितवाक्य 20:2)। ''**बांध**'' के लिए यूनानी शब्द (*deō*) का अर्थ है, ''पाबन्दी'' या ''रोक।'' इसका अर्थ यह नहीं है कि शैतान से उस की शक्ति पूरी तरह से छीन ली गई है। यह दृष्टांत संकेत देता है कि यीशु ने शैतान के इलाके पर हमला किया था, और उसके सताए हुओं को उससे लूट रहा था। प्रभु उन लोगों के जीवनों को वापस ला रहा था, जो दुष्टात्माओं के कब्जे में थे।

आयत 30. यीशु ने अपने सुनने वालों को चेतावनी दी, ''**जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है।**'' कोई या तो यह मानता है कि यीशु अपने आश्चर्यकर्म परमेश्वर के पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा करता है, या वह यह मान ले कि वह उन्हें शैतान की शक्ति से करता था। यीशु के साथ तटस्थ नहीं रहा जा सकता। या तो वह वही था, जो होने का उस ने दावा किया या वह उन बेशुमार झूठे नबियों में से एक था, जो संसार में आए। व्यक्ति या तो उस की ओर है, या फिर उसके विरुद्ध है (10:32, 33)।

मसीह ने यह भी कहा, ''**जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता है।**'' पिछली आयतों की तरह (9:36; 10:6, 16) उस की भाषा चरवाहे के भेड़ों को चराने के आधार पर थी (1 राजाओं 22:17; यशायाह 40:11; यिर्मयाह 31:10; यहेजकेल 34:11-16; मीका 2:12; नहूम 3:18; जकर्याह 13:7)। चरवाहा या तो यीशु के साथ काम करते हुए उस की भेड़ों को बटोरता है या फिर यीशु के विरुद्ध काम करते हुए उन्हें अलग-अलग दिशाओं में बिखेर देता है।

आत्मा की निन्दा (12:31, 32)

[31]''इसलिए मैं तुम से कहता हूं, मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। [32]जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात करेगा, उस का यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उस का अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा''।

आयत 31. अपने अन्तिम फैसले में यीशु ने जिस **पाप** की बात की उसे आमतौर पर ''क्षमा न किया जाने योग्य पाप'' कहा जाता है। बाइबल इस शब्द का इस्तेमाल नहीं करती, पर यीशु ने अवश्य कहा कि पाप की **क्षमा न की जाएगी**। यह पाप क्या है? इन फरीसियों ने क्या किया था? उन्होंने पवित्र **आत्मा** की सामर्थ को शैतान की सामर्थ बता दिया था। वे यह कह रहे थे कि आत्मा के द्वारा किए गए दुष्टात्माओं को निकालने के यीशु के आश्चर्यकर्म किसी ''अशुद्ध'' या ''बुरी'' आत्मा की शक्ति से किए जा रहे थे (मरकुस 3:30)। उन्होंने पवित्र आत्मा की निन्दा की। सबसे छोटे अर्थ में **निन्दा** (*blasphēmia*) का अर्थ परमेश्वर के अनादर में बातें करना है।

पवित्र आत्मा की निन्दा के प्रति यीशु की चेतावनी आज्ञा तोड़कर पाप करने वालों के लिए पुराने नियम के दण्ड से मेल खाती है। गिनती 15:30 कहता है, ''परन्तु क्या देसी क्या परदेशी,

जो प्राणी ढिठाई ['ऊंचे हाथ से' (RSV)] से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर करने वाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए।'' व्यवस्थाविवरण 29:20 भी ऐसे मूर्ति पूजक और विद्रोही की बात करती है, जिसे परमेश्वर ''क्षमा नहीं करेगा''; ''यहोवा उस का नाम धरती पर से मिटा देगा।''

आयत 32. यीशु ने कहा कि क्षमा किसी के लिए भी सम्भव है, **जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा**। बाद में पतरस ने तीन बार प्रभु का इनकार किया, फिर भी उस ने उसे क्षमा करके सेवा में वापस बहाल कर दिया (26:69-75; यूहन्ना 21:15-17)। पौलुस को भी क्षमा मिल गई, चाहे वह ''पहले निन्दा करने वाला और सताने वाला और अन्धेर करने वाला'' था (1 तीमुथियुस 1:13; देखें प्रेरितों 9:1, 2)।

तौभी ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए जो पवित्र आत्मा के विरुद्ध बोलता है, क्षमा सम्भव नहीं है। यह उन कई कठिन वचनों में से एक है, जो क्षमा पाने की अयोग्यता की बात बताते हैं (इब्रानियों 6:4-6; 10:26-31; 1 यूहन्ना 5:16, 17)। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे को यह मानना अच्छा लगता था कि यह पाप विश्वास के आधार को नकारने से सम्बन्धित है:

> मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध बोलने से बढ़कर पवित्र आत्मा के विरुद्ध बोलना विनाशकारी क्यों है? चाहे वह समझ की हमारी सामर्थ से थोड़ा बाहर है; परन्तु हम इतना जानते हैं कि पुत्र के विरुद्ध बात करने वाले को बाद में पवित्र आत्मा की गवाही से विश्वास हो जाता है और वह विश्वासी बन जाता है। परन्तु यदि पवित्र आत्मा के दिए हुए प्रमाण को नकार कर इसे शैतान की ओर से मानता है तो वह उस प्रमाण को नकार देता है, जिसके आधार पर विश्वास हो सकता है; और बिना विश्वास के कोई क्षमा नहीं है।[5]

इसलिए जब यीशु ''अक्षम्य पाप'' अर्थात क्षमा न हो सकने वाले पाप की बात कर रहा था तो वह उन फरीसियों को सम्बोधित कर रहा था, जो उस की सेवकाई को बालज़बूल (शैतान) के आश्चर्यकर्मों का नाम लेकर नष्ट करने का प्रयास कर रहे थे।

पेड़ और इसका फल (12:33-37)

[33]''यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो या पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ अपने फल से ही पहचाना जाता है। [34]हे सांप के बच्चो, तुम बुरे होकर कैसे अच्छी बात कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है। [35]भला मनुष्य, मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य, बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है। [36]और मैं तुमसे कहता हूं कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे। [37]क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।''

आयत 33. पहले पहाड़ी उपदेश में यीशु ने झूठी शिक्षा देने वालों के विषय में कहा था, ''उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। ... अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है'' (7:16-18)। यहां फिर उस ने **पेड़** और **उसके फल**

के रूपक का इस्तेमाल किया। यह बात सीधे तौर पर फरीसियों के लिए थी। उन्होंने यह कहते हुए कि यीशु शैतान की शक्ति से दुष्टात्माओं को निकाल रहा है, अपने मनों से उसके विरुद्ध बुरे आरोप लगाए। अपोक्रिफा यानी बाइबल की अप्रामाणिक पुस्तक प्रवक्ता ग्रंथ 27:6 में कहा गया है, ''पेड़ की खेती से इसके फल का पता चल जाता है; वैसे ही मनुष्य की बातों से उसके मन के स्वभाव का पता चल जाता है'' (NRSV)।

आयत 34. यीशु ने अपने आलोचकों को **सांप के बच्चो** के रूप में बताया। फरीसियों और सदूकियों को डांटने के लिए जो यरदन नदी के पास उससे बपतिस्मा लेने के लिए आते थे, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला भी इसी अभिव्यक्ति का इस्तेमाल करता था (3:7)। ''बच्चो'' के लिए यूनानी शब्द (*gennēma*) का अनुवाद ''सन्तान'' हुआ है (देखें 23:29-33)। ''सांप'' (*echidna*) शब्द को भूमध्य संसार में पाए जाने वाले कई किस्मों के ज़हरीले सांपों के लिए कहा हो सकता है। पौलुस को मालटा के टापू पर लकड़ियां बटोरते हुए एक सांप ने काट लिया था (प्रेरितों 28:3-6)। ऐसे सांप द्वारा काटा जाना अत्यधिक पीड़ादायक और मृत्यु का कारण भी बन सकता है।

विषैले सांपों के बच्चों की तरह मनुष्यों द्वारा गढ़ी हुई अपनी विषैली शिक्षाओं को फैलाते हुए फरीसी टोलियों में इधर-उधर घूमते थे (23:15)। उनकी भ्रष्ट शिक्षा परमेश्वर की सच्चाई को सुनने के लिए लोगों के दिमाग बन्द करके उनके मनों में ज़हर घोलती थी।

यीशु ने दिखाया कि उसके विरुद्ध बातें करने वाले अपनी ही बातों से अपने ऊपर दोष लगाते थे। उस ने कहा, ''**तुम बुरे होकर कैसे अच्छी बात कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है।**'' वे धार्मिक और भक्तिपूर्ण व्यवहार दिखाते, परन्तु उनके मुंह से उनके भ्रष्ट मन की गवाही मिलती थी (देखें 15:18, 19)।

आयत 35. यूनानी शब्द *thēsauros* का अर्थ **खज़ाना** या वह स्थान हो सकता, जहां इसे रखा जाता था, जैसे ''भण्डारगृह'' या ''गोदाम'' (2:11 पर टिप्पणियां देखें; 6:19, 20)। जो कुछ किसी के मन में रखा है, वही उसके मुंह में से बाहर आता है। यदि किसी ने अपने मन में **अच्छे** विचार और बातें रखीं तो वह वही बोलेगा। दूसरी ओर यदि उस ने अपने मन को **बुराई** से भरा हुआ है तो वह उसी को बोल सकता है। मुंह से आमतौर पर पता चल जाता है कि वास्तव में व्यक्ति के मन में क्या है (देखें नीतिवचन 4:23, 24)।

आयतें 36, 37. यीशु ने अपने सुनने वालों को चेतावनी दी कि वे जितनी भी निकम्मी **बातें** कहेंगे, **न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देना होगा**। ''निकम्मी'' (*argos*) शब्द का अनुवाद ''फिज़ूल'' या ''लापरवाही से'' भी हो सकता है। यीशु यहां पर उस की बात नहीं कर रहा था, जिसे लोग आमतौर पर ''फिज़ूल'' बातें कहते हैं। बल्कि वह उस बोल-चाल की बात कर रहा था, जो दुर्भावनापूर्ण, हानिकारक, और निन्दात्मक थीं।[6] ऐसी बेकार की बातों से कोई भलाई नहीं होती और उनका न्याय अवश्य होगा। किसी की बातें या तो उसे **निर्दोष** या फिर **दोषी** ठहराएंगी। व्यक्ति की बातों से ही पता चलेगा कि उस का वास्तविक स्वभाव और परमेश्वर की कचहरी में न्याय उसी के आधार पर होगा।

❖❖❖❖❖ सबक ❖❖❖❖❖

सच्चा न्याय (12:22-30)

मसीह से कई सदियों पहले यशायाह भविष्यवक्ता ने ये निरुत्तर करने वाले शब्द कहे थे: ''हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अन्धियारे को उजियाला और उजियाले को अन्धियारा ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं!'' (यशायाह 5:20)। फरीसियों ने पवित्र आत्मा की सामर्थ को गलत ढंग से दुष्टात्माओं के सरदार बालज़बूल की बिगड़ी हुई न्याय की इस किस्म को दिखाया था। इसके विपरीत हमें प्रतिदिन के कामकाज में सच्चा न्याय करना चाहिए। हमें निर्णय लेने से पहले अच्छी तरह से छानबीन करके निष्पक्ष ढंग से प्रमाण का मूल्यांकन करना चाहिए। हमें मन में पहले से बने हुए विचारों, स्वार्थों और पक्षपात जैसी बातों को अपने निर्णय में लाने के प्रति सचेत रहना चाहिए। यीशु ने समझाया, ''मुंह देखा न्याय न करो, परन्तु ठीक-ठीक न्याय करो'' (यूहन्ना 7:24)।

डेविड स्टिवर्ट

''फूट पड़ा हुआ घर'' (12:25)

''फूट पड़ा हुआ घर'' का उदाहरण आमतौर पर अब्राहम लिंकन का माना जाता है, क्योंकि उस ने अपने सबसे प्रसिद्ध भाषणों में से एक में इसका इस्तेमाल किया। लिंकन जो उस समय सीनेट के कैंडिडेट थे पर बाद में अमेरिका के राष्ट्रपति बन गए, ने घोषणा की, ''जिस घर में फूट हो, वह स्थिर नहीं रह सकता। मेरा मानना है कि यह सरकार जो पक्के तौर पर आधी गुलाम और आधी आजाद है, टिक नहीं सकती।''[7] लिंकन बाइबल का एक समर्पित पाठक था और इस कारण उस ने यीशु की इस भाषा का इस्तेमाल किया।

प्रभु के कहने का अर्थ यह था कि फूट किसी भी संस्थान को गिरा सकती है। गृहयुद्धों ने कई देशों को विभाजित करके उनका पतन किया। समाज, मण्डली या परिवार के बीच फूट विनाश का कारण बन सकती है। इसके विपरीत मसीही लोगों को आदर्श नागरिक, कलीसिया के सदस्य और परिवार के लोग बनकर एकता को बढ़ावा देना चाहिए (1 पतरस 2:17; इफिसियों 4:3; 5:22-6:4)।

बलवन्त को बान्धना (12:29)

दुष्टात्माओं को निकालकर यीशु ने दिखाया कि उस में शैतान के ऊपर शक्ति है; उस ने बलवन्त को बान्धकर उसके घर को लूट लिया। आज हमारे लिए संसार में पाई जाने वाली सारी बुराई से निराश हो जाना आसान है। हमें यह याद रखना आवश्यक है कि ''जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है'' (1 यूहन्ना 4:4)। एक प्रसिद्ध गीत हमें याद दिलाता है कि ''कई बार लगता है कि बुराई बहुत मज़बूत है, पर हाकिम परमेश्वर ही है।''[8] पौलुस ने लिखा, ''यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन होगा?'' (रोमियों 8:31; NIV)। कहा जाता है कि ''एक और परमेश्वर मिलकर बहुसंख्या बन जाते हैं।''[9] हमें याद रखना चाहिए कि शैतान का अंत होने को है कि उस के अन्त पर पहले ही मोहर लग चुकी है (प्रकाशितवाक्य 20:10)।

बेपरवाही से कही बातें (12:36, 37)

आम लोगों के बीच में हो सकता है कि व्यक्ति बड़ा सोच समझकर बोले, परन्तु एकांत के पलों में वह अपने मुंह पर ताला न रखते हुए गंदी-गंदी बातें बोले। याकूब ने लिखा है:

> पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है, जो कभी रुकती ही नहीं; वह प्राण नाशक जहर से भरी हुई है। इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं; और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं, शाप देते हैं। एक ही मुंह से धन्यवाद और शाप दोनों निकलते हैं। हे मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए (याकूब 3:8-11)।

परमेश्वर हमारी बातचीत को देखता है और जो कुछ हम कहते हैं हमें उन शब्दों का लेखा देना पड़ेगा। जो कुछ हम मुंह से बोलते हैं उन शब्दों का लेखा देना पड़ेगा। यदि हम मानते हैं कि परमेश्वर हमारे मुंह से निकलने वाली हर बात को सुनता है, तो हमारे बोलने और बातें करने के ढंग में कितना फर्क पड़ जाएगा। हमारी बातें इस जीवन में दूसरों को हानि पहुंचाने और हमारे बारे में बुरा सोचने का कारण तो बनती ही हैं, पर बेपरवाही से कही गई बातों का वास्तविक खतरा यह नहीं है। वास्तविक खतरा, और वह खतरा जिसका संकेत यीशु ने दिया, उन बातों का परिणाम है जब हम न्याय के उस बड़े दिन परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। हमारी बातें या तो हमें दोषी ठहराएंगी या निर्दोष।

टिप्पणियां

[1]देखें *सुलैमान का सर्वश्रेष्ठगीत* 17.21. [2]यीशु पर दुष्टात्मा से ग्रस्त होने का आरोप लगाने वाले यहूदियों ने (यूहन्ना 7:20; 8:48, 52; 10:20) बाद के समयों में अविश्वासी यहूदियों द्वारा यीशु को जादूगर कहा गया था। (टालमुड *सन्हेद्रिन* 43ए; 107बी; जस्टिन मार्टिर *डायलॉग विद ट्रायफो* 69; ओरिगन *अगेंस्ट सेलस्स* 1.28.) [3]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 363. [4]यहूदी जादू-टोना करने वालों के उदाहरणों के लिए, देखें मरकुस 9:38; प्रेरितों 19:13-16; जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 8.2.5; *वार्स* 7.6.3; जस्टिन मार्टिर *डायलॉग विद ट्रायफो* 85; इरेनियुस *अगेंस्ट हेरेसीस* 2.6.2. [5]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *दि न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री*, अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 110. [6]एच. लियो बोल्स, *ए कमैंट्री ऑन दि गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 273. [7]अब्राहम लिंकन रिपब्लिकन स्टेट कन्वेंशन, स्प्रिंगफील्ड, इलिनॉयस में 16 जून 1858 को दिया गया भाषण। [8]मल्टबी डी. बेब्कॉक, ''दिस इज़ माय फादर'स वर्ल्ड,'' *सॉन्ग्स ऑफ़ फेथ एंड प्रेज़,* संस्क. एवं संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [9]फ्रैडरिक डग्लस (http://quotationsbook.com/quote/17251/; इंटरनैट, 8 मार्च 2010 को देखा गया)।